सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

मैं बपुरी मेरा राम भरतार
रच रच ताको करो सिंगार
भले निन्दो, भले निन्दउ भले निन्दो लोग।
तन मन राम पियारे जोग ।।
बाद विवाद काहू से न कीजे
रसना राम रसायन पीजे।
अब जी जान ऐसी बन आई
मिले गोपाल, निशान बजाई
उस्तुत निन्दा करे नर कोई
ताते श्री रंग भेटल सोई ।।

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹ 5

अवतरण दिवस

2 अक्तूबर 1920

kindly keep on reciting Ram Ram Ram Ram and leave the rest to the will of Shri Ram. Let us have faith that God is within us - I shall recite His Name + He shall bless all. May Blessings of Shri Ram be always upon you all.

Prem

कृपया राम राम राम राम का जाप करते रहिए और बाकी सब श्री राम की इच्छा पर छोड़ दीजिए। हमें यह विश्वास होना चाहिए कि परमात्मा हमारे भीतर हैं – मैं उनका नाम जपूँगा और वे हम सब पर कृपा करेंगे। श्री राम की कृपा आप सब पर सदा बनी रहे। ■
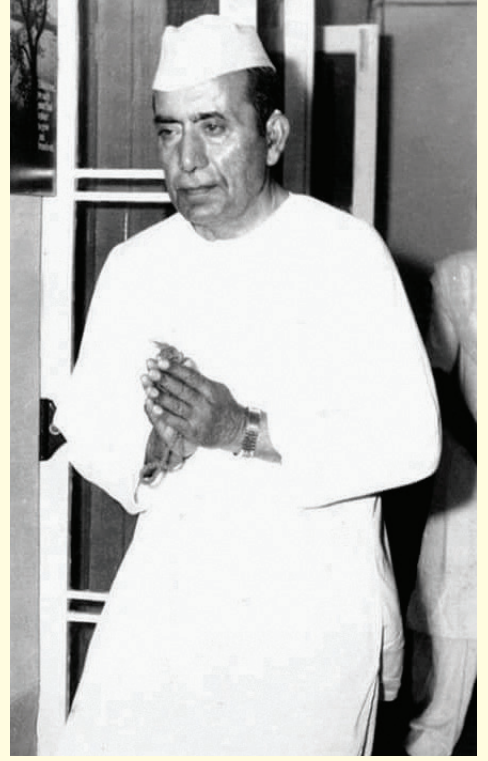
तिलक दिवस

तिलक दिवस

9 दिसम्बर 1993

पथ में प्रकटे सद्‌गुरु,
हस्त पकड़ कर आप।
ताप तप्त को शान्त कर,
दिया नाम का जाप।।

(भक्तिप्रकाश 2, पृ. 51)

निर्वाण दिवस

सद्‌गुरु की महिमा बड़ी, विरला जाने भेद।
भारे भय भव को हरे, और पाप के खेद ।।

(भक्तिप्रकाश पृ. 51)

शुभकामनाएँ

A very very happy Diwali to your good-selves.
Sadar namaskar and best wishes for a life devoted solely to Him. Satnamaya jeevan ho.
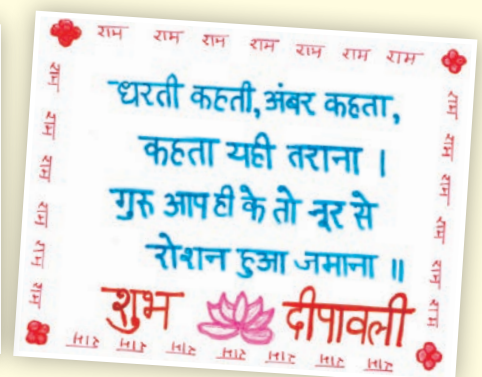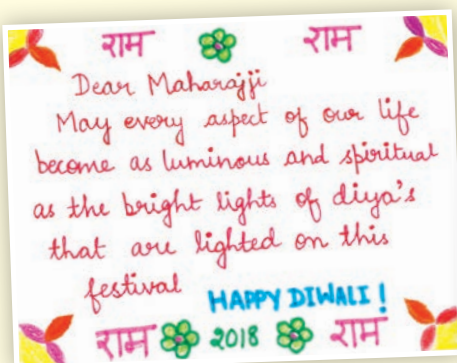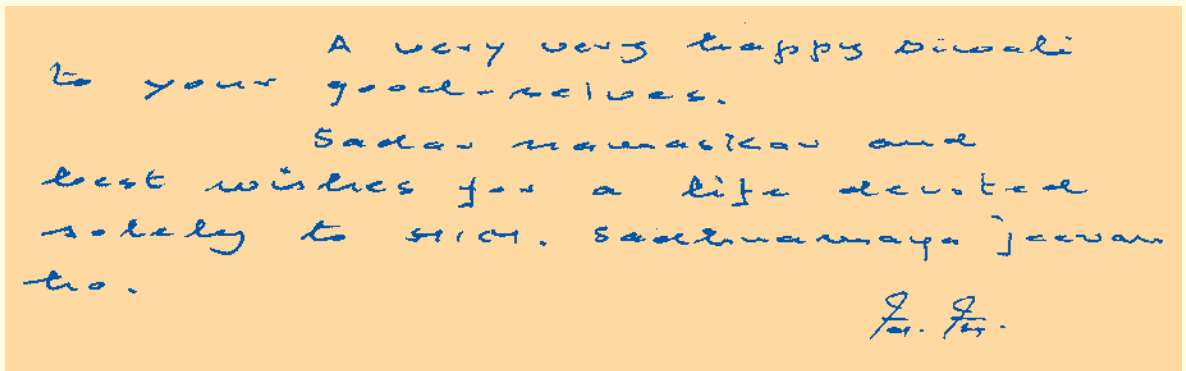
त्याग
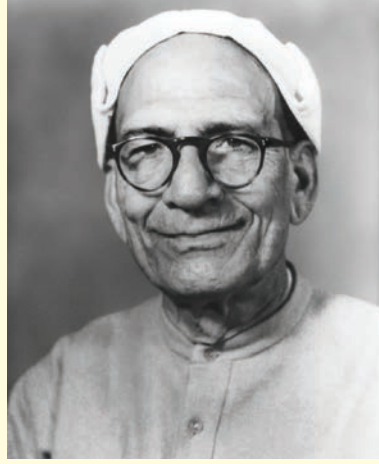
सत्यानन्द

श्रीभगवान् ने कहा, सांसारिक पदार्थों की कामना से उत्पन्न हुए कर्मों के त्याग को ज्ञानी लोग सन्यास नाम से जानते हैं। और सब कर्मों के फलों के त्याग को बुद्धिमान् लोग त्याग कहते हैं॥२॥

The Lord said, the renunciation of action induced by desire for worldly objects is what the learned ones call *sanyaas* and the abandonment of the fruits of all actions is what the wise call *tyaag*. (2)

यज्ञ, दान, तप और कर्तव्य कर्म त्यागने योग्य नहीं हैं, किन्तु करने योग्य ही हैं। यज्ञ करना, दान देना और तप करना ये कर्म बुद्धिमानों को भी पवित्र करने वाले हैं॥५॥

Sacrifice, charity, austerity and dutiful actions are not to be given up, but must indeed, be performed. Indeed sacrifice, charity and austerity purify even the wise. (5)

हे पार्थ! परन्तु ये यज्ञादि कर्म भी आसक्ति और फलों की कामना को त्याग कर करने चाहियें, यह निश्चित और उत्तम मत है ॥६॥

O Partha! But even these acts of sacrifice should be performed without attachment and desire for fruit, this is my firm and best belief. (6)

स्वाभाविक कर्म, माता पिता आदि के सम्बन्ध का तथा कर्तव्य कर्म नियत कर्म हैं ऐसे — नियत कर्म को त्याग उचित नहीं है। अज्ञानवश, उस नियत कर्म को त्याग देना तामस त्याग वर्णन किया है ॥७॥

Duties born of one's intrinsic qualities such as duties towards parents and daily responsibilities are obligatory. The abandoning of such obligatory duties is not proper. Giving up obligatory duties in ignorance is understood as *tamas tyag*. (7)

(*Sanyaas* : Asceticism, *Tyaag* : sacrifice, *Tamas* : illusion, ignorance)

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की हस्तलिपि श्रीमद्भगवद्गीता भाषा, अध्याय 18/2, 5, 6, 7 पृ. 338–340)

त्याग और भगवत् प्राप्ति

गृहस्थ आश्रम में रहता हुआ भी मनुष्य 'त्याग' के द्वारा परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। परमात्मा को प्राप्त करने के लिए त्याग ही मुख्य साधन है।

मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा, स्त्री, पुत्र और धन आदि जो कुछ भी अनित्य पदार्थ प्रारब्ध के अनुसार प्राप्त हुए हों उनके बढ़ने की इच्छा को भगवत् प्राप्ति में बाधक समझ कर उसका त्याग करना चाहिए।

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के प्रवचन, 13-10-1975 परम पूजनीय महाराज की डायरी से)

संसार सागर पार होना है तो त्याग का मार्ग अपनाइये

त्याग : साधक की पात्रता

महर्षि याज्ञवल्क्य उपदेश दे कर संन्यास के लिए चले जाते हैं। मैत्रेयी साधना के लिए चली जाती है। मैत्रेयी महर्षि पराशर के आश्रम में आ जाती है। एक पर्ण कुटिया में निवास करने लग जाती है। बड़ी उग्र साधना, साधना में बहुत लगन है उसे। उसकी लगन को देखकर महर्षि पराशर बहुत impress होते हैं, बहुत प्रभावित होते हैं। अतःएव पहले दिन से ही उसको उपदेश का पात्र मान कर उसे उपदेश देते हैं। उन्हें लगा यह उपदेश की सही पात्र है, मानो पहले तैयारी हुई है, थोड़ी बहुत तैयारी की आवश्यकता है और उसे अमरपद की प्राप्ति हो जाएगी।

स्वामी जी महाराज ने अमरपद शब्द का दो एक बार प्रयोग किया है। अमरत्व की प्राप्ति। यदि किसी को भी, किसी साधक को भी, शान्ति चाहिए तो उसे एक शब्द याद रखना चाहिए वह शब्द है त्याग। इसके बिना शान्ति नहीं मिल पाएगी। इसके बिना बाकी सब कुछ मिल जाएगा लेकिन शान्ति नहीं मिल पाएगी। जिस दिन सुबह पेट साफ नहीं होता, मल का त्याग नहीं होता तो सारा दिन कितना गंदा बीतता है। मूत्र रुक जाता है, आपका जीना दूभर हो जाता है, आपको तुरन्त अस्पताल ले जाया जाता है। आपको मूत्र का त्याग हो जाता है तो कितना सुख मिलता है, सकून मिलता है। ये गंदी चीज़ें हैं, इनका शरीर से विसर्जन होता है, इनका शरीर से त्याग होता है तो सुख मिलता है।

यदि वे चीज़ें जिन्हें अध्यात्म छोड़ने के लिए कहता है उनका व्यक्ति त्याग करेगा, शान्ति नहीं मिलेगी तो और क्या मिलेगा? शान्ति या परमानन्द की प्राप्ति करना चाहते हो, अमरपद की प्राप्ति करना चाहते हो तो संचय का मार्ग नहीं। संचय हमेशा बाह्य वस्तुओं का ही नहीं हुआ करता है, भीतरी का भी होता है। संत महात्मा कहते हैं भीतरी सम्पदा का संचय करो। वह सम्पदा यहाँ नहीं रहती और बाह्य सम्पदा यहीं टिकी रहती हैं। उसे कोई माई का लाल आज तक लेकर नहीं जा सका और भीतरी सम्पदा का एक तिनका भी यहाँ नहीं रख सकता, वह सारी की सारी आपके साथ जाती है। Choice आपकी है आप बाहरी सम्पदा इकट्‌ठी करना चाहते हो या भीतरी सम्पदा इकट्‌ठी करना चाहते हो? मैत्रेयी को भीतरी सम्पदा एकत्रित करने के लिए, संचित करने के लिए उपदेश दिया जा रहा है।

जब महर्षि याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी से कहा त्याग का मार्ग अपनाओ, तुझे परम शान्ति मिलेगी। तुझे अमरपद की प्राप्ति होगी। अपनी बुद्धि के अनुसार, अपनी मति के अनुसार, अपने ज्ञान के अनुसार, अपनी विद्या के अनुसार जो वह त्याग का अर्थ समझती थी, उसने वह त्याग कर दिया। मानो महर्षि यह कह रहे हैं कि तुझे किसी चीज़ को अपना नहीं समझना, सब कुछ परमात्मा का है इत्यादि इत्यादि। लेकिन वहाँ तक पहुँचते–पहुँचते रास्ते के सोपान बहुत हैं, बहुत सीढ़ियाँ चढ़नी होंगी तब जाकर इस स्थान पर पहुँचना होगा। आज मन ही मन सोचती है, मेरे पास और तो कुछ है ही नहीं यहाँ पर? मैं एक कुटिया में रहती हूँ कहीं महर्षि पराशर यह बात तो नहीं कह रहे कि मैं कुटिया छोड़ दूँ? मैत्रेयी ने आज सर्वप्रथम कुटिया को छोड़ दिया है। थोड़े से गहने, थोड़े से कपड़े इत्यादि थे जो मैत्रेयी अपने घर से साथ ले कर आई हुई थी। इसके अतिरिक्त उसके पास कोई पूंजी, कोई नगदी इत्यादि कुछ नहीं था। आज पहली बार पर्णकुटी का त्याग करके तो कहीं रहना शुरु कर दिया है। शान्ति तब भी नहीं मिली।

महर्षि पराशर ने फिर आकर एक ही शब्द कहा,"मैत्रेयी! त्याग करेगी तो शान्ति मिलेगी। तेरे मन में जो संकल्प–विकल्प उठ रहे हैं, तभी शान्त होंगे, जब तू त्याग करेगी। जब तेरा त्याग पूर्ण होगा तो शान्ति भी तुझे पूर्ण ही मिलेगी।" इतनी सी बात कह कर महर्षि पराशर फिर चले गए। मैत्रेयी ने अब समझा, शायद ये मेरे पास जो गहने–कपड़े इत्यादि हैं महर्षि इनका भी त्याग करने का संकेत दे रहे हैं। आज वह भी छोड़ दिए। गहने इत्यादि जो कुछ भी थे, एक छोटी सी पोटली थी उसका भी त्याग कर दिया। मानो कहीं फैंक दिया उसे, उसका कहीं विसर्जन कर दिया। Forget about it। मैत्रेयी उसे

भी भूल गई है। कोई सरोकार नहीं उससे भी, सोचा अब त्याग पूर्ण हो गया होगा। लेकिन शान्ति तो अभी भी नहीं। महर्षि फिर आए हैं। आकर फिर पूछा मैत्रेयी, ''क्या तेरी मनोकामना अभी पूर्ण हुई कि नहीं हुई? क्या तुझे शान्ति मिली कि नहीं? क्या तुझे परमानन्द की प्राप्ति अभी तक हुई कि नहीं हुई?'' ''नहीं! महर्षि अभी तक मुझे शान्ति की प्राप्ति नहीं हुई,''मैत्रेयी ने कहा।

''त्याग कर, मैत्रेयी ! त्याग कर। मैत्रेयी ! त्याग कर। त्यागने से तुझे परम शान्ति मिलेगी।'' ''क्या त्याग करुँ। क्या चीज़ रह गई है मेरे पास?''मन ही मन सोच कर अपने शरीर के जितने कपड़े थे सब उतार दिए। अंग रक्षा के लिए स्वामी जी महाराज ने लिखा है एक दो कपड़े जो रखने की जरुरत थी, अपने गुप्त अंगों को सुरक्षित रखने के लिए, वह दो कपड़े छोड़कर बाकी सब कुछ का त्याग कर दिया। उसके बावजूद भी शान्ति नहीं मिली। मानो ये सबके सब बाह्य त्याग हैं। बात तो भीतरी त्यागों की है। सिर मुंडवाने से कोई महात्मा नहीं हो जाता, बाल बढ़वाने से कोई महात्मा नहीं हो जाता, कपड़े बदलने से कोई महात्मा नहीं हो जाता। मन बदलने से होता है। यह भीतर की बातें हैं, बाह्य त्याग जितना भी हो जाएगा उससे आपको परम शान्ति कभी प्राप्त नहीं होगी। महर्षि पराशर इस बात की ओर संकेत दे रहे हैं।

आज फिर कहा,''मैत्रेयी ! त्याग कर। शान्ति मिलेगी।'' आज मैत्रेयी बहुत दुःखी है, ''मेरे पास क्या रह गया है जो मैं त्याग करुँ?'' आज महर्षि के सामने कहा, ''महर्षि! एक शरीर ही मुझे दिखाई देता है, अब आप कहें तो मैं इसका भी त्याग कर दूँ ? त्याग करने को तैयार हूँ पर मुझे परम शान्ति चाहिए।'' ऐसी पक्की मैत्रेयी। ऐसे पक्के पर परमात्मा की अपार कृपा होती है। परमात्मा का प्यार ऐसे पक्कों को ही मिलता है। कच्चों को नहीं मिलता। जो इधर उधर भटकने वाले हैं जिनका कोई ठौर ठिकाना ही नहीं है उनको शान्ति नहीं मिलती। भटकना ही मिलती है और भटकना में दुःख ही दुःख है। अशान्ति ही अशान्ति है, शान्ति कहीं नहीं। इसकी सुदृढ़ता को देख कर, इसके पक्केपन को देख कर, आज गुरु महाराज संत महात्मा निहाल हो गए हैं। यह शान्ति की वास्तविक पात्र है। इसे परम शान्ति मिलनी ही चाहिए। आज उसे त्याग का रहस्य समझाते हैं।

स्वामी जी महाराज ने त्याग क्या होता है यह समझाया है। जो मेरी छोटी सी बुद्धि त्याग के बारे में कहती है, वही आपकी सेवा में अर्ज़ कर रहा हूँ। जैसे व्यक्ति मन्दिर में जाता है फूल चढ़ाता है, फल चढ़ाता है, मिठाई, पैसे इत्यादि चढ़ाता है, यदि किसी में ऐसी हिम्मत हो अपने आपको परमात्मा को चढ़ाने की तो वह त्याग है। फूल चढ़ाना बहुत आसान है। फल चढ़ाना बहुत आसान है, मिठाई का डिब्बा खरीदो हल्दीराम से और चढ़ा दो मन्दिर में जाकर, क्या फर्क पड़ता है इससे? क्या त्याग है इसमें? कोई माई का लाल ! अपने आप को त्याग करने के लिए राजी हो तो वह त्याग करके देखे, कि उसे शान्ति मिलती है कि नहीं। उसी क्षण शान्ति मिलेगी।

आज महर्षि पराशर इसी त्याग की चर्चा कर रहे हैं। अपने आपको परमात्मा को चढ़ा देना, सब कुछ परमात्मा का है, मेरा कुछ नहीं है। यूँ कहो यह भ्रान्ति–यह मकान मेरा है, यह पति मेरा है, यह पत्नी मेरी है, यह परिवार मेरा है, यह घर मेरा है – इस भ्रान्ति का निराकरण त्याग है। यह आन्तरिक बातें है यह बाह्य त्याग नहीं है। पुत्री मेरी है, यह मेरा है, वह मेरा है, मेरा मेरा इस भ्रान्ति का त्याग, त्याग कहा जाता है। Nothing belongs to me सब कुछ परमात्मा का है, यह बोध ही सबसे बड़ा त्याग है–अनासक्त जीवन। इसी को अनासक्त जीवन कहते हैं। फिर फक्कड़ आदमी जीता है मेरा कुछ नहीं है परमात्मा की दी हुई चीज़ें हैं उनका सेवन कर रहा हूँ, परमात्मा के दिए हुए घर में रह रहा हूँ। परमात्मा के दिए हुए परिवार का पालन पोषण कर रहा हूँ। जो Duties मुझे दी हैं उन कर्तव्यों का मैं पालन कर रहा हूँ But nothing belongs to me। मैं संसार का नहीं हूँ और संसार मेरा नहीं। मैं परमात्मा का हूँ और परमात्मा मेरा है।

मैत्रेयी का प्रसंग जीवन में उतारने योग्य है। नाम की उपासना इसी अवस्था तक, इसी स्थिति तक पहुँचने के लिए बल देती है। राम–राम जपते हो, सत्संगों में आते हो, यही बल प्राप्त करने के लिए ताकि इस स्थिति तक पहुँच सकें जिस स्थिति पर महर्षि पराशर मैत्रेयी को पहुँचाना चाहते हैं। जिस स्थिति पर मैत्रेयी पहुँच गई है। उसके बिना आप सोचो, आप ऐसा कभी मानोगे कि आपको शान्ति मिल जाएगी तो यह सम्भव नहीं है। यदि यह बात सम्भव होती तो आज महर्षि पराशर मैत्रेयी को इस प्रकार का उपदेश न देते। ये उपदेश अभी के नहीं हैं। उपनिषद् काल के हैं। ये कथाएँ जितनी भी स्वामी जी महाराज ने ली हैं याज्ञवल्क्य की, सारी की सारी बृहदारण्यक उपनिषद् से ही हैं। उपनिषद् काल से ही हैं।

(परम पूजनीय महाराज जी का प्रवचन) ■

प्रशंसा साधक के लिए घातक

(भाग 2)

विश्वामित्र

हमने कभी इस प्रशंसा की gravity पर ध्यान नहीं दिया। ऐसी घास है यह प्रशंसा जो असली पौधे को उगने नहीं देती, पनपने नहीं देती, उसका विकास नहीं होने देती। मत इसके पीछे पीछे घूमिएगा। वह तो भिखमंगा है, कंगाल है जो अपनी प्रशंसा सुनने के लिए इधर उधर भटकता है। आज यहाँ, कल वहां, परसों उसके पास, भिखारियों की तरह, कंगालों की तरह, दो शब्द प्रशंसा के सुनने के लिए घूमता फिरता है।

देवर्षि नारद, इनका चलते ही रहने का स्वभाव है, इनको बैठने की इज़ाज़त नहीं। आज परमेश्वर का ऐसा खेल–कुछ अन्तर्मुखी हो गए। एकान्त स्थान पर कहीं समाधि लगाने को मन कर गया, समाधि लग गई, इन्द्र देवता का सिंहासन हिला, ये समाधिष्ठ हो गए तो मेरा सिंहासन इनके हवाले, मैं सिंहासनहीन हो जाऊँगा। इसलिए मुझे कुछ करना चाहिए, कामदेव को भेजते हैं, जाओ भाई इनकी समाधि भंग करो। औरों की समाधि लगनी चाहिए, इस व्यक्ति की समाधि टूटनी चाहिए। कामदेव ने अपने सारे उपाय जितने वह कर सकते थे, किए। कहते हैं काम ने उस वक्त इतना विस्तार कर लिया कि सन्तों महात्माओं तक, योगियों तक, वैरागियों तक का सिंहासन डांवाडोल हो गया, सबके अन्दर काम जागृत हो गया। लेकिन देवर्षि नारद विचलित नहीं हुए। आँख खुली सामने काम को देखा, सारी बात जान ली। कहा, "जाओ इन्द्र को कहो मुझे तेरे सिंहासन की आवश्यकता नहीं"। क्रोध भी नहीं आया, काम को भी जीत लिया, मानो उसी वक्त देवर्षि नारद के मन में एक बात आ गई कि मैंने काम को जीत लिया, क्रोध को जीत लिया एवं लोभ को भी जीत लिया है।

भगवान् शिव के पास भी काम आए थे, उन्होंने काम को जला दिया। क्रोध आया जला दिया मानो मैं उनसे superior हो गया। (क्रोध भी नहीं आया काम पर भी मैंने विजय प्राप्त कर ली और इन्द्र के सिंहासन का लोभ भी नहीं हुआ। इन तीनों विकारों पर मैंने विजय प्राप्त कर ली।) अच्छा लग रहा है न आपको सुन के, विजयी हो गए देवर्षि नारद। ध्यान देना, सारी इन्द्रियों पर हो सकता है उन्होंने काबू पा लिया हो लेकिन एक इन्द्रिय अभी खाली है और वह है उनका कान। जाते–जाते कामदेव कह गए महात्मन् मैंने आप जैसा महापुरुष आज तक नहीं देखा। प्रशंसा की वर्षा कर गए तो अभिमान की घास उग कर रहेगी। कामदेव जाते–जाते घास उगा गए। अब देवर्षि नारद की मति भ्रष्ट, धूमिल दृष्टि, धूमिल मति। एक भक्त को प्रशंसा के साथ कैसे deal करना चाहिए यह पद्धति भूल गए। जानते हो न, भक्त सीधे कोई चीज़ स्वीकार नहीं करता, भक्त जो कुछ भी लेता है, प्रसाद रुप में लेता है। काश! देवर्षि नारद को यह याद रहा होता। तो यह जो थाली प्रशंसा की उनके आगे रखी गई है, वह तुरन्त भगवान् के आगे खिसका देते। महाराज यह सीधी थाली मुझे खाने का अभ्यास नहीं है, आप खाइए और मुझे प्रसाद दीजिए तो बच गए होते। लेकिन वह इस पद्धति को उस वक्त भूल गए। क्यों प्रशंसा का भूत सिर पर सवार हुआ था?

काश! देवर्षि नारद को यह याद रहा होता। तो यह जो थाली प्रशंसा की उनके आगे रखी गई है, वह तुरन्त भगवान् के आगे खिसका देते। महाराज यह सीधी थाली मुझे खाने का अभ्यास नहीं है, आप खाइए और मुझे प्रसाद दीजिए तो बच गए होते। लेकिन वह इस पद्धति को उस वक्त भूल गए। क्यों प्रशंसा का भूत सिर पर सवार हुआ था?

हर एक के वश की बात नहीं है, प्रशंसा को swallow करना और प्रशंसा को पचा जाना। देवर्षि नारद आज मात खा गए, भागते भागते भगवान् शिव के पास गए मात्र अपनी उपलब्धि बताने के लिए नहीं, यह कहने के लिए कि आपसे उत्कृष्ट तो मैं हूँ ही। आपको क्रोध आ गया था काम के ऊपर, वही शत्रु मेरे पास भी आया था, मैंने

उसको मारा नहीं, क्षमा कर दिया। मैंने क्रोध के ऊपर भी विजय प्राप्त कर ली है मात्र अपनी superiority, अपनी उत्कृष्टता बताने के लिए नहीं, बल्कि और प्रशंसा सुनने के लिए। भगवान् शिव मेरी प्रशंसा करेंगे, ''वाह देवर्षि ! तूने कमाल कर दिया।'' भगवान् शिव जानते हैं कि देवर्षि कितनी बड़ी गलती कर रहे हैं। मन ही मन कहते हैं देवर्षि जो तूने यह बात मुझे बताई है यहीं इसे ठप्प कर दे। मेरे कहने पर भी तू नहीं मानने वाला। तू जाएगा बैकुण्ठ और भगवान् के साथ भी यह बात करेगा। पर मैं तुझे कहूँगा कि यह बात उनसे जाकर न करना। देवर्षि नारद सोचते हैं कि भगवान् शिव मेरे प्रति ईर्ष्यालु हो गए हैं, तभी मुझे मना कर रहे हैं। देखें, जब मति भ्रष्ट हो जाती है तो क्या हालत होती है। You can not take a correct decision. हम तो हर वक्त इन विकारों से ग्रस्त रहते हैं। सोचें, दिन में कितने निर्णय इस प्रकार के गलत हो जाते होंगे। देवर्षि तो थोड़ी देर के लिए इस रोग से ग्रस्त हुए हैं और उनकी क्या हालत है। काश देवर्षि तूने यह कहा हुआ होता कि परमेश्वर की कृपा से यह यह हो गया है तो मुझे बहुत अच्छा लगता। तू आया तो मुझे लगा, आज एक भक्त आ गया है, राम भक्त आ गया है, आज राम चर्चा होगी, पर मुझे आश्चर्य हुआ, यहाँ राम चर्चा नहीं हुई काम चर्चा हुई। तेरी मति को क्या हो गया? भगवान् विष्णु के पास गए वही गलती की।

सन्त महात्मा कहते हैं वास्तव में इस संसार में यह पक्की बात अपने पल्ले बांध लो कोई व्यक्ति प्रशंसनीय नहीं है कोई है तो वह हैं परमात्मदेव। इस भ्रम को दूर करो, मत अपनी प्रशंसा सुननी चाहो और न ही दूसरे की गलत मलत प्रशंसा करो, इससे उसको नुकसान होता है।

भगवान् ने कहा बच्चा है यह घास स्वयं नहीं काट सकेगा, इसे मुझे ही काटना होगा। लोग परमेश्वर के पास जाते हैं, माया से मुक्त होने के लिए, महाराजधिराज मुझे इस माया से मुक्त कीजिएगा और देवर्षि नारद भगवान् के पास गए हैं, मुझे माया से युक्त कीजिएगा। ठीक है बेटा तू रोगी है और इस वक्त मैं डाक्टर, तू जो माँग रहा है चूंकि कुपथ्य है, मैं किसी भी हालत में तुझे नहीं दूंगा। मैं डाक्टर हूँ तेरा बाप हूँ और वही दूँगा जिसमें तेरा हित है। मैं तेरी शादी विश्वमोहिनी के साथ नहीं होने दूँगा। देवर्षि नारद भगवान् से उन का रुप उनका सौन्दर्य माँगने गए हैं। मैं विश्वमोहिनी से शादी करना चाहता हूँ। जीवन भर का ब्रह्मचर्य भूल गए हैं देवर्षि, आज किस चक्कर में पड़ गए हैं। भगवान् ने उन्हें बन्दर का रुप दे दिया। विश्वमोहिनी ने वर लिया भगवान् को। देवर्षि नारद ने श्राप दे दिया भगवान् को। जाओ मानव हो जाओ। ठीक बात है बेटा, कोई परवाह नहीं। पर मैं तेरे साथ गलत काम नहीं होने दूँगा। मैं बाप हूँ, तू कुपूत हो सकता है मैं कुबाप नहीं हो सकता। मैं कुपथ्य नहीं दूंगा। मैं तेरी शादी विश्वमोहिनी से नहीं होने दूंगा, बेशक मुझे कुछ भी करना पड़े, कुछ भी बनना पड़े, इसकी परवाह नहीं। भगवान् ने श्राप शिरोधार्य किया।

प्रशंसा रुपी घास इसे काटिएगा या किसी से कटवाइएगा नहीं तो जन्म–जन्मान्तर का चक्कर चलता रहेगा। आप सोच रहे हैं, आपकी कमाई नित्य बढ़ रही है। लेकिन नहीं, कमाई बढ़ नहीं रही, यह घास उगता हुआ आपको दिखाई दे रहा है, असली चीज़ तो दिखाई नहीं दे रही वह तो बीच में सूखती जा रही है। यह घास और लम्बा–लम्बा, ऊँचा–ऊँचा हो रहा है यह प्रशंसा का घास अभिमान का घास इसे कटवाईएगा। भक्ति के मार्ग के अनुयायी हो न!

एक साधन तो आपकी सेवा में प्रस्तुत कर ही दिया है यह पद्धति याद रखिएगा।

अन्नपते ! यह अन्न है, तेरा दान महान्।

(भक्तिप्रकाश पृ. 23)

अपनी थाली महाराज को परोस दीजिएगा, खिसका दीजिएगा भगवान् की तरफ। महाराज मुझे सीधा खाने की आदत नहीं है। आप खाइए आपको तो कुछ नहीं होता जितनी आपकी प्रशंसा की जाए, थोड़ी है और हमारी तनिक भी प्रशंसा हमारे लिए घातक है। आप तो इस प्रशंसा से बहुत आगे हैं और हम प्रशंसा के कतई योग्य नहीं हैं। दिन में कोई भी काम करते हो छोटा या बड़ा, परमेश्वर को याद करते हुए करो और याद करते हुए कहो, "इस व्यक्ति से इतना बड़ा काम परमात्मदेव तेरी कृपा के बिना नहीं हो सकता। वास्तव में प्रशंसनीय

तो तू है परमात्मा ! जो मेरे जैसे टके के आदमी को, एक गन्दी नाली के कीड़े को प्रशंसनीय बना देता है। यह प्रशंसा मेरी नहीं है यह प्रशंसा वास्तव में तेरी है"। सन्त महात्मा कहते हैं कि वास्तव में इस संसार में कोई व्यक्ति प्रशंसनीय नहीं है। कोई है तो वह हैं परमात्मदेव। यह पक्की बात है इसे अपने पल्ले बाँध लो। इस भ्रम को दूर करो, न अपनी प्रशंसा सुनो और न ही दूसरे की गलत मलत प्रशंसा करो, इससे उसको नुकसान होता है। आप भले ही प्रशंसा करके अपना स्वार्थ तो उससे सिद्ध कर लोगे लेकिन उसका तो आपने नुकसान कर दिया। किसी का नुकसान करने वाले का, उसको स्वयं कोई नुकसान न हो यह बात तो हो नहीं सकती। थोड़ी देर के लिए हो सकता है आपको लाभ हो। लेकिन कालान्तर में तो आपको नुकसान हो कर रहेगा, क्योंकि आपने किसी दूसरे का नुकसान किया है। भरत के कान बड़े सुन्दर, भगवान राम की करनी बड़ी सुन्दर, भरत की कोई प्रशंसा करता है तो उसे सुनाई देता कि यह मेरी नहीं मेरे राम की प्रशंसा है। उसने अपने कानों को बदल लिया हुआ है, उसे अपनी प्रशंसा सुनाई नहीं देती यह मेरे राम की प्रशंसा हो रही है। चरण पादुका दे दी, ले लो भरत जाओ इन्हें स्थापित कर देना ये राज्य करेंगी। सिर पर धारण करके उन्हें ले गया है, लेकिन उदास है। भगवान् राम उसकी उदासी का कारण समझ रहे हैं। उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहते हैं, "प्रिय, राज्य का बोझ, बोझ मान रहे हो, मैं तुम्हें ढंग बताऊँ हल्का करने का? ये बोझ बोझ नहीं रहेगा। ये गुरु वशिष्ठ हैं न तेरे साथ, यह बोझ की गठरी उनकी ओर खिसका देना"। लंका जीत के आज भगवान् राम अयोध्या पहुँच गए हैं। बलाढ्य प्रशंसा, जय जयकार रघुनाथ की, रावण जैसे राक्षस को, मेघनाथ, कुम्भकरण इत्यादि को मार के आए हैं। पढ़ा है न रामचरित मानस में भगवान् ने क्या किया। वहाँ हनुमान जी पास खड़े थे, पास ही गुरु वशिष्ठ खड़े थे, कहा, "किसकी जय जयकार कर रहे हो करने वाले तो ये हैं।"

अपनी प्रशंसा की थाली खिसका दो भगवान् की ओर और याद रखो प्रशंसनीय केवल भगवान्, उसके अतिरिक्त और कोई नहीं। उसने टके–टके के आदमी को, हम जैसे व्यक्ति जो किसी काम के नहीं, महा निक्कमे, न जाने अपने आपको क्या समझने वालों को भी प्रशंसनीय बना दिया हुआ है। प्रशंसा तो, वाह–वाह तो उस देवाधिदेव की करो। जाप करो, परमेश्वर के नाम की आराधना करो और साथ में उसकी वाह वाह करते जाओ। यही स्वामी जी की साधना है।

(प्रशंसा साधक के लिए घातक का पहला भाग अप्रैल 2018 के सत्य साहित्य में छपा था) ■

अनुभूति

'मेरे राम रुप गुरुदेव'

मेरा एक ही भाई था, अमेरिका में जा कर रहने लगा था। जून 1992 में फोन आया, कि भाई बहुत बीमार है, हस्पताल में है और डॉ. ने कैंसर बताया है जो लीवर (Liver) तक पहुँच गया है। धैर्य का बाँध टूट गया, आँसू थमने का नाम न लें। बच्चों ने उसी समय मेरा अमेरिका जाने का प्रबन्ध करना शुरु कर दिया। सारा दिन बड़ी बेचैनी में रोते रोते कटा। प्रातः होते ही श्रीरामशरणम् राम रुप गुरुदेव प्रेम जी महाराज की चरण शरण में आई। उन्होंने राम नाम का जाप करने के लिए कहा। मैं अकेले कभी देहली में भी आ जा नहीं सकती थी। न जाने कैसे गुरु कृपा से मेरा राम मुझे अमेरिका ले गया। एक सप्ताह बाद भाई का देहान्त हो गया। पूज्य स्वामी जी महाराज की उस पर बड़ी कृपा बनी रहती थी। बड़ा शान्त गया।

तीन महीने बाद वहाँ से लौट कर आई। श्रीरामशरणम् आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। दो सप्ताह बीत गए, एक दिन कृपा निधान गुरुदेव श्री प्रेम जी महाराज स्वप्न में आए और अपने श्री मुख से तथा इशारा करके कहने लगे, 'चले आना मैं वहीं पर हूँ'। उस दैवी शक्ति ने प्रेरणा दी और मैं श्रीरामशरणम् आने लगी। श्रीरामशरणम् में पहुँच कर ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे राम स्वरुप गुरुवर मेरा हाथ पकड़ कर मुझे इस पुण्य स्थली पर लेकर आए हैं। ■

बच्चों का शिविर

मुम्बई, (मई 2018), में श्री रामशरणम् के बच्चों के लिए चार दिन के एक शिविर का आयोजन किया गया था। चार रोज़ बच्चे आधे–आधे दिन के लिए आते थे। इस शिविर में मुम्बई के 8 से 11 वर्ष के 30 ने बच्चों भाग लिया। इस शिविर का स्वरुप बातचीत और संवाद पर आधारित था। श्री रामशरणम् के सभी नियमों का पूर्ण रुप से पालन हुआ। (किसी भी प्रकार का भोजन नहीं परोसा गया।)

कार्यक्रम इस प्रकार था : पहले दिन बच्चों को परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज की जीवनी सुनाई गई। इसके बाद यह बात हुई कि प्रभु राम सदा हमारे हृदय में वास करते हैं और गुरुजन सदा हमारे पास विराजमान रहते हैं। तत्पश्चात् उन्होंने भोजन के पहले और भोजन उपरान्त कही जाने वाली प्रार्थना सीखी। कुछ ने इस प्रार्थना को जल्दी याद कर लिया और उत्साहित हो कर सुनाया भी।

अगले दिन शिविर की शुरुआत ध्यान की छोटी बैठक से हुई, जिसमें बच्चों ने बड़ी लगन से भाग लिया। बच्चों ने "अपने सबसे अच्छे दोस्त प्रभु राम" के बारे में बताया और उत्साह से अपने विचार सांझा किए। किसी ने बताया कि भगवान राम उसकी सोने में मदद करते हैं तो कुछ ने कहा स्वामी जी और गुरुजन उनके साथ सपनों में खेलते हैं। कई बच्चों ने कहा कि स्कूल की परीक्षा के समय वे उनकी मदद करते हैं। एक बच्चे ने बताया कि जब भी बिजली कटती है तो वह परमात्मा से प्रार्थना करता है और बिजली आ जाती है।

बच्चों को गुरुजनों की जीवनी सुनाई गई। उन्होंने बहुत उत्साहित हो कर गुरुजनों के बचपन के बारे में प्रश्न किए, जैसे उनके pet name, घर का पता आदि। बच्चों ने "राम शब्द" के चित्र बनाए और खुशी–खुशी अपने घर ले गए।

हर दिन पिछले दिन के संक्षिप्त विवरण से आरम्भ होता था। तीसरे दिन बच्चों को प्रार्थना के बारे में समझाया गया। सभी बच्चों को जाप की एक–एक माला दी गई और *उपासक का आन्तरिक जीवन* दिया गया। बच्चों ने वायदा किया कि वे रोज़ इसका एक पृष्ठ पढ़ेंगे और जाप भी करेंगे। बच्चे पहले दिनों की तरह बातचीत करना चाहते थे। एक ने बताया कि वह उस समय प्रार्थना करता है जब भी पड़ोस में कोई लड़ाई की आवाज़ आती है। दूसरे ने कहा कि जब भी ambulance देखता है तो वह प्रार्थना करता है।

आखिरी दिन बच्चों के माता पिता भी आमंत्रित थे। पहले दिनों की तरह ध्यान की एक छोटी सी बैठक हुई। उसके बाद माता–पिता और बच्चों ने मिल कर खुशी से श्री अमृतवाणी का पाठ किया। उसके बाद उन्होंने परम पूजनीय श्री महाराज जी के दो प्रवचन सुने। एक प्रवचन बच्चों को सुसंस्कृत कैसे करें और दूसरा प्रवचन महात्मा गांधी और अहिंसा के बारे में था। इसके बाद बच्चों ने बड़े चाव से भजन सुनाए। आखिर में उन्हें उपहार के रुप में एक एक व्यक्तिगत अमृतवाणी दी गई। शिविर की पूर्ति 'सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः' को 7 बार करते हुए हुई।

बच्चों ने शिविर को बेहद पसन्द किया। चारों दिन उन्होंने पूरे जोश से शिविर में भाग लिया और अपने आपको श्री रामशरणम् के बच्चे होने का सौभाग्य समझा।

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जुलाई से सितम्बर 2018

साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून तक तीन दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें दूर दूर के शहरों के साधक सम्मिलित हुए और 104 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सैर्ल्सबर्ग**, अमेरिका में 28 से 30 जून तक दो रात्री खुला सत्संग लगा जिसमें 14 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूजनीय श्री महाराज जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **काठमण्डू**, नेपाल में 7 जुलाई को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 78 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **विदिशा**, मध्यप्रदेश में 15 जुलाई को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 281 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 22 से 27 जुलाई तक व्यास पूर्णिमा (गुरुपूर्णिमा) के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा। 22 जुलाई को 18 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में 28 एवं 29 जुलाई को परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में खुला सत्संग लगा। 27 जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन 139 नाम दीक्षा भी हुई।
- **जालन्धर**, पंजाब में 5 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 255 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोहतक**, हरियाणा में 11 एवं 12 अगस्त को खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में 6 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 148 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रतनगढ़**, राजस्थान में 8 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 184 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भुन्तर**, कुल्लु, हिमाचल प्रदेश में 9 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 112 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हीरानगर**, जम्मू एवं कश्मीर में 14 सितम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 119 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रेवाड़ी**, हरियाणा में 15 एवं 16 सितम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 39 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जम्मू** में 21 से 23 सितम्बर तक तीन दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें दूर दूर के शहरों के साधक सम्मिलित हुए। 23 सितम्बर को नाम दीक्षा हुई।
- **सिडनी**, आस्ट्रेलिया में 29 एवं 30 सितम्बर को खुला सत्संग होगा जिसमें नाम दीक्षा भी होगी।
- हरिद्वार में 30 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग हो रहा है।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में जुलाई और अगस्त में 162 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।
- **धारीवाल**, पंजाब में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है और सत्संग हाल का लैंटर पड़ गया है।

दिल्ली

- **श्रीरामशरणम्** में 31 दिसम्बर, सोमवार को प्रातः श्रीअमृतवाणी पाठ के बाद श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ आरम्भ होगा जिसकी पूर्ति 1 जनवरी 2019 मंगलवार को प्रातः 7 से 8:15 बजे भजन कीर्तन एवं प्रवचन से होगी। तत्पश्चात् मंगलवार का जाप आरम्भ होगा।
- आर–814 **न्यू रजिन्द्र नगर** में 30 नवम्बर शुक्रवार प्रातः 11 से 12:30 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन होगा।

उद्घाटन

निष्काम भक्ति एवं अखण्ड जाप का प्रताप : श्रीरामशरणम् ओबेदुल्लागंज, 7 सितम्बर 2018, शुक्रवार को राम कृपा से, परम पूज्य गुरुजनों के आर्शीवादों की छत्रछाया में, उनकी सूक्ष्म भावमयी उपस्थिति में श्रीरामशरणम् ओबेदुल्लागंज (मध्यप्रदेश) का भव्य उद्घाटन–अलौकिक दिव्यता के साथ उनके द्वारा ही संपन्न हुआ।

इस संबन्ध में मोगा (पंजाब) से पधारे एक साधक भाई ने सुन्दर ढंग से दर्शाया है। ''अपार कृपा ! अपार कृपा !!! यहाँ गुरुजनों की एक विशेष कृपा देखने को मिली। जहाँ पर श्रीरामशरणम् बना है उस परिसर का नाम साधन धाम रखा गया है। उस मोहल्ले का नाम नानकपुरा है। जो उमरिया वार्ड (नगर पालिका, ओबेदुल्लागंज) का हिस्सा है। साथ में गुरुद्वारा है। बारिश होने से यहाँ भी साधकों को संगत में बिठाया गया। वहीं पर बाहर, जहाँ बाबा का परसादी –लंगर तैयार किया गया, वह जगह राम जानकी मंदिर है। ऐसे लग रहा था सभी गुरुजन मिलकर काम करवा रहे हैं। हर कोई सेवा के भाव में रंगा हुआ था।

बस बाबा की कृपा! बाबा ही जानें। खूब रंग बरसा। भारी वर्षा के बावजूद लगभग 5000 भाई–बहनों ने प्रीतिभोज लिया। कार्यक्रम के पश्चात् 687 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

उद्घाटन से सात दिन पहले श्री राम नाम अखण्ड जाप का शुभारम्भ हुआ। सात दिवसीय अखण्ड जाप में भारी संख्या में साधकों ने भाग लिया।

वर्ष 2004 में इस स्थान के पहले साधक ने नाम दीक्षा ली फिर राम नाम के जाप के आनन्द की पताका पूरे क्षेत्र में फहराने लगी। परम पूजनीय श्री महाराज जी फरमाते है, ''निष्काम भक्ति का फल और और अधिक भक्ति।'' इनका यह वचन साकार प्रतीत हुआ।

परम पूजनीय गुरुजनों की व परमात्मा की असीम कृपा से 14 सितम्बर को सरदाशहर में आयोजित विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् 1791 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। जिनमें शहर/गाँव के 1500 युवाओं ने (15 से 30 वर्ष आयु वर्ग) ने नाम दीक्षा ग्रहण की। गुरुजनों की सूक्ष्म उपस्थित में एकाग्रचित होकर मानो आध्यात्मिक ज्ञान (परा विद्या) को ग्रहण कर ये युवा समस्त ब्रह्माण्ड में पूज्य श्री के श्री मुख से निकले वचनों को ''सांसारिक विद्या के साथ आध्यात्मिक विद्या के मिश्रण से ही जीवन में पूर्णता, शान्ति एवं परमानंद की प्राप्ति होगी'' ही विस्तारित कर रहे हों।

सरदाशहर में आयोजित विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन

Sadhna Satsang (October 2018 to March 2019)

Haridwar	30 Sept. to 3rd Oct.	Sunday to Wednesday
Haridwar (Ramayani)	10 to 19 October	Wednesday to Friday
Haridwar	11 to 14 November	Sunday to Wednesday
Gwalior	23 to 26 November	Friday to Monday
Indore	4 to 7 January	Friday to Monday
Hansi	1 to 4 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Wednesday to Saturday

Open Satsang (October 2018 to March 2019)

Gurdaspur	5 to 7 October	Friday to Sunday
Hisar	20 & 21 October	Saturday & Sunday
Kathua	28 October	Sunday
Pathankot	3 & 4 November	Saturday & Sunday
Fazalpur, Kapurthala	17 & 18 November	Saturday & Sunday
Bhiwani	8 & 9 December	Saturday & Sunday
Bhopal	11 December	Tuesday
Surat	15 & 16 December	Saturday & Sunday
Dewas	25 December	Tuesday
Sujanpur	29 to 30 December	Saturday & Sunday
Jhabua	13 to 15 January	Sunday to Tuesday
Bikaner	19 & 20 January	Saturday & Sunday
Pilibanga	9 &10 February	Saturday & Sunday
Bilaspur	15 to 17 February	Friday to Sunday
Delhi (Holi)	20 to 22 March	Wednesday to Friday
Narrot Mehra	26 March	Tuesday

Poornima (October 2018 to March 2019)

24 October	Wednesday
23 November	Friday
22 December	Saturday
21 January	Monday
19 February	Tuesday
21 March	Thursday

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam, Delhi (October 2018 to March 2019)

21 October	Sunday	10:30 AM
11 November	Sunday	11.00AM
23 December	Sunday	11.00AM
27 January	Sunday	11.00 AM
24 February	Sunday	11.00 AM
17 March	Sunday	11.00 AM

Naam Deeksha in other Centres (October 2018 to March 2019)

07 October	Sunday	Gurdaspur, Punjab
21 October	Sunday	Hisar, Haryana
28 October	Sunday	Kathua, J&K
04 October	Sunday	Pathankot, Punjab
18 November	Sunday	Kapurthala, Punjab
24 & 25 November	Saturday & Sunday	Gwalior, MP
02 December	Sunday	Jalandhar, Punjab
09 December	Sunday	Bhiwani
09 December	Sunday	Bhopal, MP
16 December	Sunday	Surat, Gujrat
16 December	Sunday	Dahod, Gujrat
17 December	Monday	Petlawad,MP
18 December	Tuesday	Bolasa,MP
19 December	Wednesday	Kalyanpura,MP
20 December	Thursday	Kushalgarh, Rajasthan
25 December	Tuesday	Dewas, MP
30 December	Sunday	Sujanpur, Punjab
06 January	Sunday	Indore, MP
11 January	Friday	Saagwada,Dungarpur, Rajasthan
12 January	Saturday	Saatsera, MP
13 January	Sunday	Jhabua, MP
20 January	Sunday	Bikaner, Rajasthan
03 February	Sunday	Hansi, Haryana
10 February	Sunday	Jandiala Guru, Punjab
10 February	Sunday	Pilibanga, Rajasthan
17 February	Sunday	Bilaspur, HP
26 March	Tuesday	Narrot Mehra, Punjab

'सत्य साहित्य' के उद्देश्य और नियम

उद्देश्य

1. 'सत्य साहित्य' का मुख्य उद्देश्य श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज के लोक कल्याणकारी साहित्य का व्याख्यात्मक शैली से प्रकाशन करना है।
2. 'सत्य साहित्य' का दूसरा उद्देश्य है उस साधना पद्धति का प्रचार और प्रसार करना जो सच्ची और सरल है, वेदशास्त्र सम्मत है और भावुक साधकों के अनुभव में आ चुकी है।

नियम

1. 'सत्य साहित्य' हर तीन माह में प्रकाशित होगा।
2. 'सत्य साहित्य' में परम पूज्य स्वामी श्री सत्यानंद जी महाराज, परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज एवं परम पूज्य महाराज जी के प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य से सम्बन्धित विचार प्रकाशित होंगे।
3. 'सत्य साहित्य' के 'अनुभूतियाँ' विभाग में गुरुजनों के सम्पर्क या परिचय में आए हुए साधकों के अपने अनुभव प्रकाशित होंगे।
4. 'सत्य साहित्य' के 'पत्र और उत्तर' विभाग में साधकों के पत्र और उनके उत्तर उनके पत्रों के आधार पर प्रकाशित होंगे।
5. 'सत्य साहित्य' में गुरुजनों के साहित्य और सिद्धान्तों से सम्बन्ध रखने वाली कविताएँ, गीत आदि भी प्रकाशित हो सकेंगे।
6. 'सत्य साहित्य' में प्रकाशनार्थ आई हुई सामग्री को शीघ्र या विलम्ब से प्रकाशित करना श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट्, नई दिल्ली, के अधीन होगा।
7. आवश्यकतानुसार नियमों में परिवर्तन, परिवर्धन हो सकेगा, किन्तु ध्येय वही रहेगा जो इन नियमों से प्रकट है।■

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924